IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षा में कला: शिक्षा में कला प्रशिक्षण का महत्व

Tejinder Kaur[1]

[1] Assistant Professor, Brmt College of education, State Council of Educational Research and Training Najafgarh.

शोध सार

कला ही जीवन है,जो हमारे जीवन को सुखमय आनंदमय बनती हैI कला हर क्षेत्र में होती है, चाहे वह नृत्य हो, संगीत हो, नाट्य हो,चित्रांकन हो आदि कला का क्षेत्र बहुत व्यापक हैI हम कला को एक सीमित दायरे में नहीं रख सकते हैं,कला के द्वारा एक मनुष्य अपने अंदर के भावओं और अपनी इच्छाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त कर सकता हैI कला को हम विभिन्न भागों में बताते हैं, जिसमें से मुख्य है,ललित कला व शास्त्रीय काल| प्राथमिक स्तर पर बच्चों को दृष्टात्मक कला एवं प्रदर्शनआत्मक कला का ही ज्ञान दिया जाता हैI सत्यम शिवम सुंदरम का प्रयोग अधिकतर ईश्वर द्वारा रचित इसी सृष्टि के लिए प्रयोग होता हैI 64 कलाओं का वर्णन भारतीय शास्त्र में किया गया है कला की जरूरत हर विषय को पढ़ने या पढ़ने के लिए काम या अधिक मात्रा में की जाती हैI कला मानव जीवन का आधार है, कला को बहुत से विद्वानों ने अपने-अपने शब्दों में बहुत ही सुंदर ढंग से परिभाषित किया है, जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, टॉलस्टॉय ,अरस्तु, फ्राइड, दाते आदि प्रमुख है|

कला और शिक्षा का आपस में बहुत गहरा संबंध है, या यूं कहीं एक के बिना दूसरा अधूरा है, कला के द्वारा हम एक मनुष्य की भावनात्मक, ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक तीनों क्षेत्रों को विकसित कर सकते हैंI कला शिक्षा के द्वारा हम एक बच्चे के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास मान सकते हैं| आज के समय के मनुष्य के जीवन में से कला को अलग करना संभव नहीं हैI इसलिए दिन प्रतिदिन प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कला का महत्व बढ़ता ही जा रहा हैI प्रयोगऐतिहासिक काल में भी मनुष्य अपने मन के उद्गारों को नई-नई वस्तुओं व कलाओं के द्वारा शांत किया करता थाI ज्यादा तार वे वे शिकार के दृश्यों का वर्णन अपने चित्रों के माध्यम से किया करता था|

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता गया वैसे-वैसे मनुष्य नगर, भवन, नहरे आदि बनाने में भी भरपूर रुचि लेने लगाI आधुनिक युग में काल को ही एक बच्चे के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना गया है| हमारे धर्म शास्त्रों में भगवान शिव को काल का आधार और बुद्धि के दाता मन गया हैI वहीं दूसरी तरफ मां सरस्वती को संगीत व विद्या की देवी माना गया हैI पूजा की थाली में जो कच्चे सूत का बना कलवा होता है, वह हमें कल की मेहता के बारे में बताता हैI जिसे जब हम हाथ में बांधते हैं, तो हम अपने आप को कलापूर्ण महसूस करते हैं, रामायण, महाभारत के अतिरिक्त हमें अनेक काव्य ग्रंथों में भी कल के महत्व का ज्ञान मिलता है| वात्स्यायन ने जिन 64 कलाओं का वर्णन अपने ग्रंथ कामसूत्र में किया है, उन सभी के नाम यजुर्वेद के तीसरे अध्याय में मिलते हैं|

कला शिक्षण के द्वारा हम एक बच्चे में बहुत से विकास कर सकते हैं, जैसे मानसिक शक्ति का विकास, कलात्मक का विकास, शैक्षिक योग्यता का विकास, आध्यात्मिकता विकास, चारित्रिक विकास, शैक्षिक योग्यता का विकास, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास, दक्षता व जीवन की दर्शनिकता का विकास इन सब विकास के द्वारा हम एक बच्चे का स्वर्ग विकास कर सकते हैं|

" कलाना प्रवर चित्र धर्मकामIअर्थ मोक्षदम I
मंगलय प्रथम चैपो प्रतिष्ठयम" II

अर्थात चित्रकला सभी कलाओं में सर्वोपरि है,यह काम, मोक्ष धर्म और अर्थ देने वाली है जिस घर में कला की प्रतिष्ठा की जाती है, वहां सब मंगल ही मंगल होता है| इस तरह के बहुत से श्लोक हमें हमारे भारतीय ग्रंथों में काम के विषय या उसकी प्रशंसा के बारे में मिल जाएंगे मौर्य काल के प्रमुख अर्थात आठवीं सदी तक शिल्प शब्द को बहुत अधिक महत्व प्राप्त थी|

[1] Assistant Professor, Brmt College of education, State Council of Educational Research and Training Najafgarh.

कला शिक्षण क्या है

कला शिक्षण का अर्थ है, एक ऐसी शिक्षा जो केवल काम की विशेषताओं को बताती है, या यूं कहे जो शिक्षा हमें काम का ज्ञान प्रदान करती है|

इस कला के अंतर्गत अनेक प्रकार की कलाएं आती है, जैसे चित्रकला,मूर्ति, कला, काव्य कला, संगीत कला,स्थापत्य कला आदि या हम यू कह सकते हैं, कि हमारे आसपास दिखने वाली सारी चीज जो प्राकृतिक है,या मानव निर्मित है, जिसे देखकर मन को प्रसन्नता होती है, कला कहलाती है, इन सब कला शिक्षकों को सीखने के लिए कई अलग-अलग विश्वविद्यालय भी है,जहां पर बच्चों को उसके भावि भविष्य के लिए तैयार किया जाता हैI कला विद्यालय में बच्चों को अनेक प्रकार के गैर शैक्षिक कौशल भी सिखाए जाते हैं|

कला, मानव इतिहास जितनी ही पुरानी धारणा है। कला हर उस स्थान पर विद्यमान थी जहाँ मनुष्य रहते थे।

कला के पूरे सार्वभौमिक इतिहास में प्रत्येक समाज के पास अपनी अनूठी कला थी। कला शिक्षा का सार यह है कि यह संगीत, रंगमंच, नृत्य और दृश्य कला सहित विभिन्न कलात्मक विषयों में ज्ञान और शिक्षा प्रदान करता है। हालाँकि, इस अवधारणा का अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग अर्थ हो सकता है। आज समाज जिस तरह से संरचित है, उसके कारण अधिकांश शारीरिक और तकनीकी कार्य जो व्यक्ति कभी हाथ से करते थे, अब मशीनों द्वारा पूरे किए जा सकते हैं। नवाचार, आविष्कारशीलता, लीक से हटकर सोच और मजबूत पारस्परिक कौशल की अत्यधिक मांग है।

कला को निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है और इसे गणित या विज्ञान की तरह कभी-कभार सीखने से नहीं सीखा जा सकता है। छात्रों पर कला का प्रभाव डालने के लिए कला में नियमित भागीदारी और शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। कला शिक्षा एक सर्वांगीण शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य घटक है, और स्कूलों में इसके महत्व को कम करके आंका नहीं जा सकता है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविध कलात्मक परंपराओं के लिए जाने जाने वाले देश में, छात्रों में रचनात्मकता और कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना सर्वोपरि है

कला शिक्षा का विकास व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और शैक्षिक विचारों का प्रतिबिंब है। तकनीक-केंद्रित प्रशिक्षुता मॉडल से ध्यान अधिक समावेशी, आलोचनात्मक और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर स्थानांतरित हो गया है जो छात्रों को उनकी सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक दुनिया दोनों के साथ गंभीर रूप से जुड़ने के लिए तैयार करता है। कला शिक्षा का विश्व स्तर पर और भारत के भीतर एक समृद्ध और विविध इतिहास है, प्रत्येक अद्वितीय सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों से प्रभावित है।

भारत के पास अनूठी परंपराओं के साथ समृद्ध कलात्मक विरासत है। हालाँकि, भारत में औपचारिक कला शिक्षा ब्रिटिश-युग के पाठ्यक्रम और प्रथाओं से काफी प्रभावित थी। ब्रिटिश सरकार द्वारा समर्थित कला विद्यालय प्रमुख भारतीय शहरों जैसे मद्रास (चेन्नई), कलकत्ता (कोलकाता), बॉम्बे (मुंबई) और लाहौर (पाकिस्तान का पंजाब क्षेत्र) में स्थापित किए गए थे। कला शिक्षा उन्नीसवीं सदी के मध्य में कला विद्यालयों की स्थापना के साथ शुरू हुई। मद्रास स्कूल ऑफ़ आर्ट (1850 में स्थापित), कलकत्ता स्कूल ऑफ़ इंडस्ट्रियल आर्ट (1854 में स्थापित), और सर जे.जे. द स्कूल ऑफ़ आर्ट इन बॉम्बे (1857 में स्थापित) इस अवधि के दौरान महत्वपूर्ण संस्थान थे। समय के साथ भारत में कला शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। यह बदलाव वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और अधिक समग्र दृष्टिकोण की इच्छा जैसे कारकों से प्रेरित है

कल को हम मुख्य तीन भागों में बताते हैं:-

- दृश्य कला (वास्तु कला चीनी मिट्टी की चीज आदि)
- साहित्य कला(कल्पना,नाटक, कविता आदि)
- प्रदर्शन कला (नृत्य संगीत थिएटर आदि)

सोनियर विलियम्स के अनुसार भारतीय कलाएं अनंत है, यूरोप में सबसे पहले यूरोप के दार्शनिक प्लेटो ने कला का वर्गीकरण किया,उन्होंने वास्तुकला और ललित कला को स्थान नहीं दियाI तत्पश्चात प्लेटो के शिष्य अरस्तू ने कला के अनेक वर्गीकरण किया भारत के नाट्यशास्त्र में भी कला का प्रयोग किया गया है|

अरस्तु ने कला को एक फालतू सी चीज मना है, उनका कहना है जो लोग धनी है, या जिनके पास व्यर्थ का पैसा है, वही कला पर पालतू पैसा खर्च करके अपने आसपास महंगी वस्तुएं रखकर अपने आप को खुशी की अनुभूति करते हैंI वहीं दूसरी तरफ जिन व्यक्तियों के पास पैसा नहीं है, जो मजदूरी करता है, घर चलाने के लिए जिसके पास धन नहीं है, उसके लिए कला एक व्यर्थ सी चीज है, वहीं दूसरी तरफ हिंगला ने काव्य कला को उच्च माना है, क्योंकि इसका आधार शब्द एवं अर्थ है, संगीत का आधार स्वर एवं लय है, चित्रकला का आधार रंग व ब्रश है वास्तु कला का आधार चुना, सीमेंट, मिट्टी आदि है|

कुछ लोगों का मानना है, कि कला समय और मानव का कल्याण करती है, दूसरे वे लोग जो 20वीं सर्दी के हैं ,और वह आधुनिक काल पर जोर देते हैं, वह मानते हैं काल ना तो सौंदर्य की अनुभूति है और ना ही उसे उससे आनंद का आभास होता है, और ना ही मानव का कल्याण कला शिक्षण को सीखने के मुख्य दो उद्देश्य है पहले सामान्य उद्देश्य व दूसरा मनोवैज्ञानिक उद्देश्य|

सामान्य उद्देश्य के अंतर्गत निम्न उद्देश्य आते हैं

- इससे बुद्धि आत्मा व शारीरिक विकास होता है|
- बच्चों के ज्ञान में वृद्धि होती है|
- बच्चों के चरित्र निर्माण में सहायक होता है|
- बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है|
- अपनी सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का आदान-प्रदान करते हैं|
- आर्थिक प्रवृत्ति में सहायक होता है|
- सामाजिक प्रवृत्ति में सहायक होता है|
- रचनात्मक सामग्री और विचारों को बनाएं और अवधारणाबद्ध करें।
- अपने विचारों और प्रयासों को विकसित और व्यवस्थित करें।
- अपने रचनात्मक कार्य को निखारें और निखारें।
- प्रतिनिधित्व के लिए कला को चुनें, मूल्यांकन करें और व्याख्या करें।
- संदेश संप्रेषित करने के लिए प्रस्तुतिकरण का उपयोग करें.
- कलात्मक कृतियों का अवलोकन एवं मूल्यांकन करें।
- अर्थ और उद्देश्य की व्याख्या करें.
- कार्य का मूल्यांकन करने के लिए मानदंड नियोजित करें।
- जानकारी और व्यक्तिगत अनुभवों को जोड़कर और जोड़कर कला बनाएं।
- रचनात्मक अवधारणाओं को समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़कर जागरूकता बढ़ाएँ।

मनोवैज्ञानिक उद्देश्य के अंतर्गत निम्न उद्देश्य आते हैं

- बच्चों में कल्पना शक्ति का विकास होता है|
- बच्चों की भावनात्मक शक्ति को बढ़ावा मिलता है|
- बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा प्रदान की जाती है|
- बच्चों में सौंदर्य की अनुभूति जागृत की जाती है|
- कल की मानवीय जीवन में क्या आवश्यकता है उसका ज्ञान बच्चों को दिया जाता है|

अरविंद नाथ ठाकुर की षाडंक की व्याख्या को भारतीय चित्र की व्याख्या के रूप में अपनाया गयाI जिसे छह भागों में बांटा गया जो है:- रूप, भेद, प्रमाण भाव,लावण्या योजना,सद्रीश्याम, वर्णिका भांग

कल के संदर्भ में भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों की राई

1. **Laots**

यह चीन के थे, इनके बारे में एक प्रसंग बहुत प्रसिद्ध है, यह अपने मित्र के साथ रोज सुबह घूमने जाते थे,पर आपस में कुछ बोलते नहीं थे, परंतु चलते हुए कभी यह आसमान को और कभी जमीन को देखते थे, और अपने आप में ही कुछ बुदबुदाते थे इन्हें एक व्यक्ति रोज देखता थाI उसे रहा नहीं गया एक दिन उसने उनसे पूछ ही लिया आप ऊपर नीचे देखते हैं Iआपस में बुदबुदा आते हैं पर कुछ बोलते क्यों नहीं लॉस को गुस्सा आया और उसने अपनी बIहे सिकुड़ते हुए उससे कहा अगर हम बात ही करेंगे तो प्रकृति की सुंदरता को कैसे महसूस करेंगे आपने हमारी प्रकृति के प्रति श्रद्धा को भंग कर दिया I ऐसे लोग जो कला को प्रकृति के नजदीक जाकर ढूंढते हैं सालों या यूं कहीं सर्दियों में एक बार मिलते हैं|

2. **रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941)**

इन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना कीI प्रसिद्ध ग्रंथ गीतांजलि लिखा जिसके लिए इन्हें नोबेल पुरस्कार 1911 में मिलाI 50-60 वर्ष की आयु के बाद इन्होंने चित्रकला प्रारंभ की यह बहुत अच्छे लेखक भी रहेI उनके चित्रों में बालक मन की कोमलता तथा निश्चलता पाई जाती हैI कविता व लेखन में यह बहुत कम शब्दों में अपनी बात कहने की कला को भली भांति पहचानते थेI वह रंगों का भी बहुत कम प्रयोग करते, ज्यादातर चित्र काली शाही के होते जो आज भी नगमा(नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट) में प्रदर्शित है, कुछ लोग इनकी कला को एक पागल व्यक्ति की कल भी कहते 1920 में इन्होंने कला भवन की स्थापना की सबसे पहले एकल प्रदर्शनी भी इन्होंने 1930 में पेरिस में लगइ|

3. **देवी प्रसाद राय चौधरी (1921-2011)**

देवी प्रसाद एक बहुत ही महान शख्सियत रहेI यह एक कुशल चित्रकार,छायाकार पत्रकार, विशेषज्ञ व कुशल रंजन कला शिक्षक रहे| इनकी शिक्षा शांतिनिकेतन में रविंद्र नाथ टैगोर की देखरेख में हुई| इन्होंने शांति के लिए अधिक कार्य कियाI 2010 में दिल्ली में इनकी चित्रों की प्रदर्शनी हुई| जिसमें इन्होंने 64 वर्ष का अपना कार्य दिखाए| नमन आहूजा ने इस प्रदर्शनी को आयोजित किया था| यह महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानते थे, और इन्होंने अंतरराष्ट्रीय शांति और युद्ध पर अधिक कार्य किया 2005 में इनकी दो पुस्तक प्रकाशित हुई|

4. **एलियट ब्लू आईजनर (1933-2014)**

इन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष कला शोध को दिएI इस समय अवधि में इन्होंने 20 पुस्तक व 500 से भी अधिक लेखI लिखे 1965 में कला शिक्षा हेतु एक एसोसिएट प्रोफेसर नियुक्त हुए यह अनेक व्यावसायिक संगठनों से जुड़े रहे|

5. **जॉन दवे (1846-1920)**

इन्हें पेड़शैल्या चिकित्सा का पितामह कहा जाता था| इनकी योग्यता कृषि विज्ञान में अधिक थी| 1880 में इन्होंने दृश्य चित्रण तथा एक हरित व्यवस्थाएं प्रारंभ कियाI यह एक कुशल कला प्रेमी चिंतक व मार्गदर्शन थे|

6. **गार्डनर (1943-अब तक)**

इन्होंने 100 शोध पत्र व 20 पुस्तक लिखीI इन पुस्तकों व लिखो को अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया| इन्हें 1985 में राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक पारितोषिक, प्रिंस ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया अवार्ड दिया गया| यह अभी भी समाज सेवा और शिक्षण कार्य में व्यस्त है| यह एवरेस्ट कॉलेज, मोम म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट न्यूयॉर्क अमेरिका फिलोसॉफिकल सोसाइटी, स्पॉन्सर फाउंडेशन (2001-2011) तक के बोर्ड सदस्य रहे|

7. **विक्टर लॉरेंस फील्ड (1903-1960)**

इन्हें कला के प्रति रुचि बचपन से ही थी, बचपन में ही इन्होंने वायलिन बजाना, गीत गाना आदि सीख लिया था Iधीरे-धीरे आम जनता में इन्होंने अपनी पहचान बना लीI यह प्राथमिक स्कूल के शिक्षक भी रहेI अंध संस्थान के निर्देश भी रहेI पेंसिलरिया विश्वविद्यालय में कला शिक्षण के प्रोफेसर भी बनेI इन्हें शिक्षा शास्त्र का प्रवर्तन कहा जाता है, इन्होंने 100 लेख लिखेI यह कला शिक्षा के विभाग के अध्यक्ष भी रहेI इनके द्वारा लिखी पुस्तक द नेचर ऑफ क्रिएटिविटी (1938) जेनेसिस ऑफ स्कल्पचरिंग (1932) ,स्कल्पचरिंग बाय द ब्लाइंड (1934) आदि|

कला शिक्षण की बच्चों के जीवन में जरूरत क्या है?

कला शिक्षण दूसरे विषयों की तरह ही एक बच्चे के जीवन के लिए बहुत आवश्यक है| कला शिक्षक द्वारा ही बच्चों के बुनियादी कौशल की नींव रखी जाती है, जो उसे आगे की शिक्षा ग्रहण करने में सहायता करता है| बच्चा प्राथमिक शिक्षा के द्वारा जो भी सीखना है, समझता है, उसकी छाप उसके मस्तिष्क पर सारी उम्र रहती है| कला शिक्षण के द्वारा बच्चों के रचनात्मक मूल्य का विकास होता है| कला शिक्षण के द्वारा बच्चों को पढ़ाया गया पाठ, उसे जीवन भर याद रहता है| छोटे-छोटे चित्रों को बच्चा अपने पाठ के आधार पर जरूर मुताबिक अपनी कार्यपुस्तिका में बनाकर अपने पाठ और कार्यपुस्तिका को और भी आकर्षित व रोचक बना सकता है I कला शिक्षक केवल स्कूलों तक ही सीमित नहीं है, अपितु उच्च शिक्षा के समय भी बच्चों की बहुत मदद करती है I विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को जानने के साथ-साथ उनकी सोच तथा उनकी राय को विकसित करने के लिए भी कला शिक्षा एक मूल्यवान शिक्षा है|

बच्चों में सीखने की क्षमता प्रत्येक बच्चे में काम या अधिक होती है, कुछ बच्चों में संवेगात्मक और व्यवहार आत्मक समस्याएं भी पाई जाती हैं| जिस कारण उन्हें अपनी शिक्षा में ध्यान देने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है ,इस संदर्भ में बच्चों का ध्यान आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए शिक्षा में कला शिक्षण का प्रयोग किया जाता है| परिणाम स्वरुप यह बच्चे में रचनात्मक अधिगम, उसके सहकारी और सहयोगी अधिगम में सहायक सिद्ध होता है|

अनौपचारिक तौर पर भी बच्चे कला शिक्षा को ग्रहण कर सकते हैं, जैसे:- समाचार पत्रों, इंटरनेट सामग्री तथा जनसंचार के द्वारा भी नई-नई तकनीक को बच्चे सीख सकते हैं I डीएलएड में सभी बच्चों के लिए कला विषय दोनों वर्ष के लिए अनिवार्य विषय है, इससे बच्चों को विभिन्न प्रकार की कला जैसे मधुबनी कला , लिपटन कला , बिंदु कला आदि बहुत सी कलाओं का ज्ञान बच्चों को दिया जाता है, ताकि वह स्कूल में जब बच्चों को पढ़ने जाए, तो पाठ के मुताबिक बच्चों को कला का ज्ञान दे सकेI अभ्यास सिद्ध (प्रैक्टिकल) के इलावा सिद्धांत (थ्योरी) भी बच्चे को पूर्ण रूप से पढ़ाई जाती है ,ताकि बच्चे को कला का गहन ज्ञान भी पूर्ण रूप से पता चल सके | जिसमें कौन सी कला को क्या कहते हैं, कहां की कला है, कब प्रयोग होती है, ताकि वह बच्चे को कला शिक्षण के आधार पर पूर्ण ज्ञान दे सके|

कला शब्द का प्रयोग लगभग 20 अर्थों में हुआ है, कुछ कला को सुंदर, कोमल, मधुर , सुख देने वाला , प्रसन्न करने वाला , आनंद देने वाला आदि मानते हैं I कला को सभी कलाओं में श्रेष्ठ माना गया हैI जहां पर कला का निवास होता है, वहां पर हमेशा सब मंगल ही मंगल होता है| शिक्षा की तरह देखें तो कला को व्यवसायिक कला के रूप में माना गया है, इसके अंतर्गत संगीत कला, छपाई कला, रंगी कला आदि शामिल है|

डीएलएड में बच्चों को कला शिक्षण का ज्ञान जब दिया जाता है, तब सब बच्चे उसे रुचि लेकर नहीं करते| केवल कुछ बच्चे जिनकी रुचि इस विषय में होती है, वही कार्य को पूर्ण कर पाते हैं, परंतु जब शिक्षक इस कार्य को बच्चों को आसानी से करना करना सिखाते हैं, तो बच्चे कार्य को आसानी से कर पाते हैंI सब बच्चे पेंटिंग में अच्छे नहीं होते सब, क्राफ्ट में अच्छे नहीं होते परंतु जिस भी कार्य में वह अच्छे होते हैं, उसे वह बहुत रुचि लेकर करते हैं| बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा को देखकर एक शिक्षक उसमें रचनात्मक क्षमता को बढ़ा सकता हैI जिससे बच्चे का शारीरिक व मानसिक बौद्धिक विकास निश्चित है, और वह अपना जीवन सुखमय व आनंद में बना सकता है| डीएलएड में बच्चों को कला शिक्षण देने के बहुत से उद्देश्य है, जैसे बच्चों में सौंदर्य के प्रति रुचि जागृत करना, लोक कलाओं और शास्त्रीय कलाओं के प्रति बच्चों के मन में श्रद्धा उत्पन्न करना, अपनी संस्कृति व अलग-अलग प्रकार की कलाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों को सिखाना, बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना, पुरानी चीजों का पुनः प्रयोग बच्चों को सिखाना,अलग-अलग प्रकार की नई-नई तकनीक से बच्चे को अवगत कराना, बच्चे का संपूर्ण विकास करना, बच्चों में परंपराओं अपनी संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न करना |

डीएलएड में एक शिक्षक के द्वारा जितनी भी कलात्मक एवं आकर्षित क्रियाएं बच्चों को कराई जाती हैं, उससे बच्चे के मन में एक प्रसन्नता का भाव जागृत होता है, जो बच्चे कला से हमेशा किसी न किसी वजह से जुड़े रहते हैं, वह हमेशा आनंदित व प्रसन्न रहते हैं| वह उनमें कोई दोष या बुराई नहीं होती| इसी कला के ज्ञान के द्वारा एक बच्चे के भविष्य का निर्माण होता है| कला शिक्षा के द्वारा हम अध्ययन तथा अध्यापन को और भी अधिक सरल व आसान बना सकते हैं, इसके अलावा स्कूल के भवन, प्रांगण को भी सुंदर आकर्षित बनाते हैं|

बहुत से बच्चे चाहते हुए भी कला शिक्षण को ग्रहण नहीं कर सकते इसके बहुत से कारण होते हैं, जैसे बच्चे की आर्थिक स्थिति, घर वालों का कला शिक्षण के प्रति रुचि न होना, समय का अभाव , जगह का अभाव आदि| कुछ बच्चों का भी यह मानना होता है, की कला शिक्षण की आवश्यकता उन्हें डीएलएड में क्यों है, परंतु जैसे-जैसे बच्चे का समय निकलता जाता है वह SEP ट्रेनिंग पर जाते हैं, स्कूलों को देखते हैं, वह बच्चों को जानना शुरू करते हैं, वैसे-वैसे उसे उन्हें कला शिक्षण के ज्ञान की जरूरत का पता चलता है और वह उसमें रुचि दिखाने लगते हैं, उन्हें यह ज्ञात हो जाता है, की कला शिक्षण के बिना एक अच्छा शिक्षक नहीं बन जा सकता| कला एक ऐसा विषय है, जिससे कोई भी विषय (हिंदी ,अंग्रेजी ,गणित ,विज्ञान आदि) अछूता नहीं है| बच्चा यह समझ जाता है, कि किसी भी विषय को गहराई से जानने के लिए आपको कला का ज्ञान अधिक या कम मात्रा में होना बहुत जरूरी है| आज के जीवन में कला एक अच्छी शिक्षा का आधार है|

डीएलएड में जब बच्चे SEP से वापस आते हैं, तो उनकी सोच कला शिक्षण के प्रति बिल्कुल बदल जाती है ,जो बच्चे इसे पसंद नहीं करते कला का विषय उनके लिए भी एक अच्छा विषय बन जाता है| क्योंकि उन्हें यह ज्ञात हो जाता है, कि वह बिना कला शिक्षण के एक अच्छे व प्रभावी शिक्षक नहीं बन सकतेI बच्चे अपने पूर्व ज्ञान व नई ज्ञान की तकनीक को जोड़कर और भी अच्छा कार्य करने लगते हैं, और कला की नई-नई कल्पनाओं को साकार करने लगते हैं, और उनकी उत्सुकता व रुचि भी अपने कार्य के प्रति दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है| बच्चा अपने पढ़ने के तरीकों को और भी अच्छा व प्रभावी बनाने के लिए दिन प्रतिदिन नए-नए प्रयास करते ही रहते हैं |

कला शिक्षा में किस प्रकार सहायक है?

कला शिक्षा में एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी भूमिका निभाती है, जो विभिन्न विकासात्मक और शैक्षणिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। शिक्षा में कला को शामिल करने से न केवल सीखने का अनुभव समृद्ध होता है बल्कि छात्रों को व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक योगदान के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण भी तैयार होते हैं। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे कला शिक्षा में सहायक है:

- **संज्ञानात्मक विकास**: कला में संलग्न होने से आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और स्थानिक तर्क जैसी क्षमताओं को बढ़ाकर संज्ञानात्मक कार्यों में सुधार होता है। कलात्मक गतिविधियों के लिए छात्रों को विश्लेषण, व्याख्या और निर्णय लेने की आवश्यकता होती है, जो अन्य शैक्षणिक विषयों में बेहतर प्रदर्शन में तब्दील हो सकता है।
- **आलोचनात्मक सोच विकास**: कलाकृति बनाकर और उसका विश्लेषण करके, छात्र आलोचनात्मक सोच कौशल का अभ्यास करते हैं। वे कला के टुकड़ों के अंतर्निहित अर्थों में गहराई से उतरते हैं, अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की सराहना करते हैं, और सीखते हैं कि जीवन के विभिन्न पहलुओं में आलोचनात्मक सोच को कैसे लागू किया जाए।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता: कलात्मक गतिविधियाँ भावनात्मक अभिव्यक्ति और विनियमन से गहराई से जुड़ी हुई हैं। कला में संलग्न होने से छात्रों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और उनका पता लगाने में मदद मिलती है, जिससे अधिक आत्म-जागरूकता, लचीलापन और भावनात्मक कल्याण हो सकता है।
- **सांस्कृतिक जागरूकता और सहानुभूति**: कला शिक्षा छात्रों को विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों और ऐतिहासिक अवधियों से परिचित कराती है, जिससे विविध दृष्टिकोणों और अनुभवों की बेहतर समझ और सराहना को बढ़ावा मिलता है। इससे सहानुभूति और सांस्कृतिक संवेदनशीलता बढ़ सकती है।
- **संचार कौशल**: कला संचार का एक रूप है जो भाषा की बाधाओं को पार करती है, छात्रों को विचारों और विचारों को व्यक्त करने के वैकल्पिक तरीके प्रदान करती है जिन्हें मौखिक रूप से व्यक्त करना मुश्किल हो सकता है। यह उन छात्रों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकता है जो संचार के पारंपरिक रूपों से जूझते हैं।
- **उत्तेजित कल्पना**: कला कल्पना को उत्तेजित करती है, जिससे छात्रों को असीमित संभावनाओं का पता लगाने की अनुमति मिलती है। यह उन्हें सामान्य से परे सोचने और नई दुनिया, विचारों और अवधारणाओं की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- ललित मोटर कौशल: युवा छात्रों के लिए, ड्राइंग, पेंटिंग और मूर्तिकला जैसी गतिविधियों के माध्यम से ठीक मोटर कौशल विकसित करने में कला शिक्षा महत्वपूर्ण है। ये कौशल लेखन जैसे शैक्षणिक कार्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **शैक्षणिक उपलब्धि**: शोध से पता चला है कि जो छात्र कला शिक्षा में भाग लेते हैं उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अक्सर उच्च होता है। यह बढ़ी हुई रचनात्मकता, विस्तार पर ध्यान और बेहतर संज्ञानात्मक कार्यों के कारण हो सकता है जिन्हें कला बढ़ावा देती है।
- **व्यक्तिगत पहचान और आत्म-सम्मान**: कला छात्रों को अपनी पहचान तलाशने और व्यक्त करने की अनुमति देती है, जिससे आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ सकता है। यह व्यक्तिगत उपलब्धि और पहचान के लिए एक मंच प्रदान करता है।
- **अंतःविषय शिक्षण**: अधिक आकर्षक और समग्र शैक्षिक अनुभव बनाने के लिए कला को अन्य विषयों के साथ एकीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, विज्ञान कक्षा में ड्राइंग करने से छात्रों को शारीरिक संरचनाओं को समझने में मदद मिल सकती है, या ऐतिहासिक रूप से प्रेरित कला बनाने से सामाजिक अध्ययन में एक विशेष समय अवधि की समझ गहरी हो सकती है। यह स्थानिक संबंधों, ज्यामिति और डिज़ाइन को समझने के लिए आवश्यक दृश्य-स्थानिक कौशल को बढ़ाता है।
- **सामुदायिक जुड़ाव**: कला शिक्षा में अक्सर सामुदायिक परियोजनाएं, प्रदर्शनियां और सहयोग शामिल होते हैं, जो छात्रों और स्कूलों और व्यापक समुदाय के बीच समुदाय और अपनेपन की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं।

कला शिक्षा के लाभ

कलाएँ सीखने का एक माध्यम हैं क्योंकि वे विभिन्न विषयों को समझने और सीखने के मामले में मानव विकास में सहायता करती हैं। यह लोगों को मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों तक पहुंच प्रदान करता है, जिससे उनके लिए निर्णय लेना और समस्याओं के समाधान के तरीके ढूंढना आसान हो जाता है। तो, कला शिक्षा के विभिन्न फायदे हैं।

- **छात्र सहभागिता को बढ़ाता है**
  कला शिक्षा का मुख्य जोर सफलता पर है, और यह टीम वर्क को प्रोत्साहित करती है। छात्रों को अपनी शिक्षा के हिस्से के रूप में वास्तविक प्रदर्शन के माध्यम से अपना कौशल दिखाने के कई मौके मिलते हैं। आप सकारात्मक सोचना सीख सकेंगे और सीखते समय अधिक आत्म-आश्वासन भी प्राप्त कर सकेंगे। यह आपको नए ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़ने और आपने जो सीखा है उसे दूसरों के सामने व्यक्त करने के लिए एक नया चैनल प्रदान करेगा।
- **विकास की मानसिकता को बढ़ावा देता है**
  कला शिक्षा के माध्यम से लोगों को लचीलापन, जुनून और विकास मानसिकता जैसे गुण मिलते हैं। इससे आपको कक्षा में और वास्तविक दुनिया दोनों में लाभ होगा। क्या आप जानते हैं कि कला शिक्षा आपको ऐसी गतिविधियों से परिचित कराएगी जो आपके शारीरिक और मानसिक विकास में सुधार करेंगी? तो, शिक्षा में कला के संपर्क के माध्यम से आपके मोटर कौशल और समस्या-समाधान क्षमताओं में सुधार होगा।
- **निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करता है**
  कला शिक्षा आलोचनात्मक सोच और निर्णय लेने के कौशल में सुधार करती है। निर्णय लेना एक प्रतिभा है जिसकी बच्चों को पेशेवर के रूप में आवश्यकता होगी, इस प्रकार ऐसा करना सीखना निस्संदेह उनके शैक्षणिक करियर के साथ-साथ उनके भविष्य के जीवन के अन्य पहलुओं में भी मदद करेगा। जब छात्रों को स्वयं निर्णय लेने की अनुमति दी जाती है, तो वे इस अवधारणा को समझना शुरू कर देते हैं कि वे अपने वातावरण का निर्माण और व्याख्या कर सकते हैं।

- **दृश्य सीखने के अवसर**
  प्रत्येक छात्र को कला बनाने और उससे जुड़ने का मौका मिलना चाहिए। यह छात्रों को आलोचनात्मक ढंग से सोचना, अपने परिवेश पर ध्यान देना, रचनात्मक ढंग से सोचना, अवधारणाओं का विश्लेषण करना और अपनी कल्पनाओं का उपयोग करना सिखाता है। इसके अलावा, यह आपको दृश्य सूचना का मूल्यांकन करना, उसके आधार पर निर्णय लेना और उसका उपयोग करना सिखाएगा|
- **सहयोग और टीम वर्क सिखाता है**
  छात्रों को नृत्य, रंगमंच और संगीत सहित कई गतिविधियों में एक टीम के रूप में सहयोग करने का मौका मिलता है। इससे वे जिम्मेदारियाँ साझा करना और एक सामान्य लक्ष्य तक पहुँचने के लिए समझौता करना सीखते हैं। इसलिए, भले ही आप मुख्य किरदार न निभाएं, फिर भी यह महत्वपूर्ण है। आपमें टीम वर्क कौशल और विचारों को साझा करने की इच्छा विकसित होगी, जिससे आपको अधिक आत्मविश्वास महसूस करने में भी मदद मिलेगी।
- **रचनात्मकता बढ़ती है**
  कला की शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र परीक्षा और मूल्यांकन में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। आप उन छात्रों की तुलना में अधिक मानसिक लचीलापन और अनुकूलनशीलता प्रदर्शित करने में सक्षम होंगे जिन्हें ऐसा निर्देश प्राप्त नहीं होता है। इसलिए, यदि आप कला की शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो आप रचनात्मक रूप से सोचने, अपनी रचनात्मकता के सभी पहलुओं को व्यक्त करने और अपनी लय के साथ नाटक, थिएटर प्रस्तुतियों और संगीत सहित मूल कार्यों का उत्पादन करने में सक्षम होंगे।

- **सकारात्मक दृष्टिकोण और अच्छी आदतों को प्रोत्साहित करता है**
  कला शिक्षा सकारात्मक संस्कृति को बढ़ावा देती है। आप कला, गायन, नृत्य, या संगीत वाद्ययंत्र बजाने की प्रक्रिया के माध्यम से धैर्यवान और दृढ़निश्चयी होना और अभ्यास करना सीखेंगे। तो, ये गतिविधियाँ आपको व्यक्तिगत विकास के लिए इन गुणों के महत्व को समझने में मदद करेंगी। इसके अलावा, जब आप उन कार्यों को करने का प्रयास करेंगे जो आपको सरल नहीं लगेंगे तो आप आत्मविश्वास विकसित करने में सक्षम होंगे। इसलिए, कला शिक्षा रचनात्मक शिक्षा के विचार के माध्यम से छात्रों में चरित्र विकास को

बढ़ावा देती है। इस प्रकार, आप जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक आदतें और आचरण सीखेंगे।

निष्कर्ष

इस लेख में हमने डीएलएड के विद्यार्थियों की कला शिक्षण के प्रति रुचि व अरुचि को बताने का प्रयत्न किया है| इस अध्ययन से हमारे समक्ष कई तथ्य आते है, जैसे कला शिक्षा बच्चों के लिए क्यों आवश्यक है, कला शिक्षा का भविष्य एक बच्चे के जीवन में कैसा है, कला शिक्षा किस तरह से बच्चे की आर्थिक स्थिति का सुधार कर सकती है आदि| इसी तरह के कई तथ्यों पर यहां पर प्रकाश डाला गया है| कला शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों को उनके मित्रों के साथ परस्पर संबंध बनाने में मधुरता का आभास होता है| बच्चे कम खर्चे में ग्रुप में रहकर कार्य करना सीख जाते हैं| शिक्षक व अभ्यर्थी के आपसी संबंधों को भी कला शिक्षण मधुर बनाता है| कला शिक्षण का प्रयोग प्रत्येक विषय के लिए बहुत ही जरूरी है ,इसके द्वारा हम अपने विषयों को और भी रुचिकर व आकर्षक बना सकते हैं| कला शिक्षा संपन्न, रचनात्मक और सांस्कृतिक रूप से जागरूक व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने में अत्यधिक महत्व रखती है। विभिन्न कला रूपों में तकनीकी कौशल सिखाने के अलावा, कला शिक्षा छात्रों को उनके अनुभवों और विचारों की व्याख्या करने और दृश्य प्रतिक्रियाएं बनाने के लिए प्रोत्साहित करके महत्वपूर्ण सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ाती है। शिक्षा का यह रूप छात्रों को विविध कलात्मक परंपराओं और दृष्टिकोणों से परिचित कराकर सांस्कृतिक प्रशंसा और सहानुभूति को भी बढ़ावा देता है, जिससे उन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और उनका सम्मान करने में मदद मिलती है। इसके अलावा, कला शिक्षा दृढ़ता और फोकस विकसित करने में सहायक है क्योंकि छात्र अपने काम को बनाने और परिष्कृत करने की पुनरावृत्तीय प्रक्रिया के माध्यम से काम करते हैं। ये कौशल जीवन के सभी क्षेत्रों में हस्तांतरणीय हैं, जिससे कला शिक्षा व्यक्तिगत और शैक्षणिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाती है। यह छात्रों को एक गतिशील दुनिया के लिए भी तैयार करता है जहां नवाचार और रचनात्मकता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

सुझाव

1. कला शिक्षा को कमरे की चार दिवारी में कैद करके नहीं सीखना चाहिए, बल्कि कक्षा से बाहर जाकर बच्चों को सीखने-सिखाने के अवसर देने चाहिए सीखना|

2. कला शिक्षण में बच्चों को कार्य कितना आया या नहीं आया इसका पता लगाने के लिए उनका मूल्यांकन बहुत आवश्यक है| कला को ऐसा विषय बनाने की आवश्यकता है, जिससे प्रत्येक बच्चा अपनी समस्या को समूह में रखकर उस पर चर्चा कर के उसके निष्कर्ष पर पहुंच सके|

3. कला की शिक्षा को बच्चों के सम्मुख भर्यमुक्त तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए, ताकि बच्चे हर कार्य को सरलता व आसानी से कर सके| इसके लिए अनौपचारिक तरीकों का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए, जैसे :-बच्चे को कला मेले में ले जाना चाहिए, कला की गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए, टीवी, यूट्यूब आदि का प्रयोग अपने कार्य को सरल बनाने में करना चाहिए

संदर्भ सूची

- कला शिक्षण —-डॉक्टर मुनेश कुमार
- कला शिक्षण—--- डॉक्टर चित्रलेखा
- प्राथमिक शिक्षक—---शैक्षिक संवाद की पत्रिका अक्टूबर (2021)
- जगदीश कुमार, एम. (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति: यह भारत में उच्च शिक्षा को कैसे प्रभावित करती है? आईईटीई तकनीकी समीक्षा, 37(4), 327-328.
- येनुगु, एस. (2022)। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी): क्या यह भारतीय उच्चतर में एक आदर्श बदलाव होगी? शिक्षा? परिप्रेक्ष्य: उच्च शिक्षा में नीति और अभ्यास, 26(4), 121-129।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यहां उपलब्ध है: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- कुमार, आर.एस. (1999)। आधुनिक भारतीय कला: एक संक्षिप्त अवलोकन। आर्ट जर्नल, 58(3), 14-21
- सीजेसमंड, आर. (1998)। आज हम कला क्यों पढ़ाते हैं? कला शिक्षा की अवधारणाएँ और उनका औचित्य। कला में अध्ययन शिक्षा, 39(3), 197-214.

- हार्डी, टी. (सं.). (2006)। उत्तर आधुनिक दुनिया में कला शिक्षा: एकत्रित निबंध। बुद्धि पुस्तकें.
- कांतावाला, ए. (2012)। औपनिवेशिक भारत में कला शिक्षा: कार्यान्वयन और थोपना। कला शिक्षा में अध्ययन, 53(3), 208-222.
- आधुनिक भारतीय कला यहां उपलब्ध है: https://ncert.nic.in/textbook/pdf/lefa107.pdf